सहायक वाचन

कक्षा 8

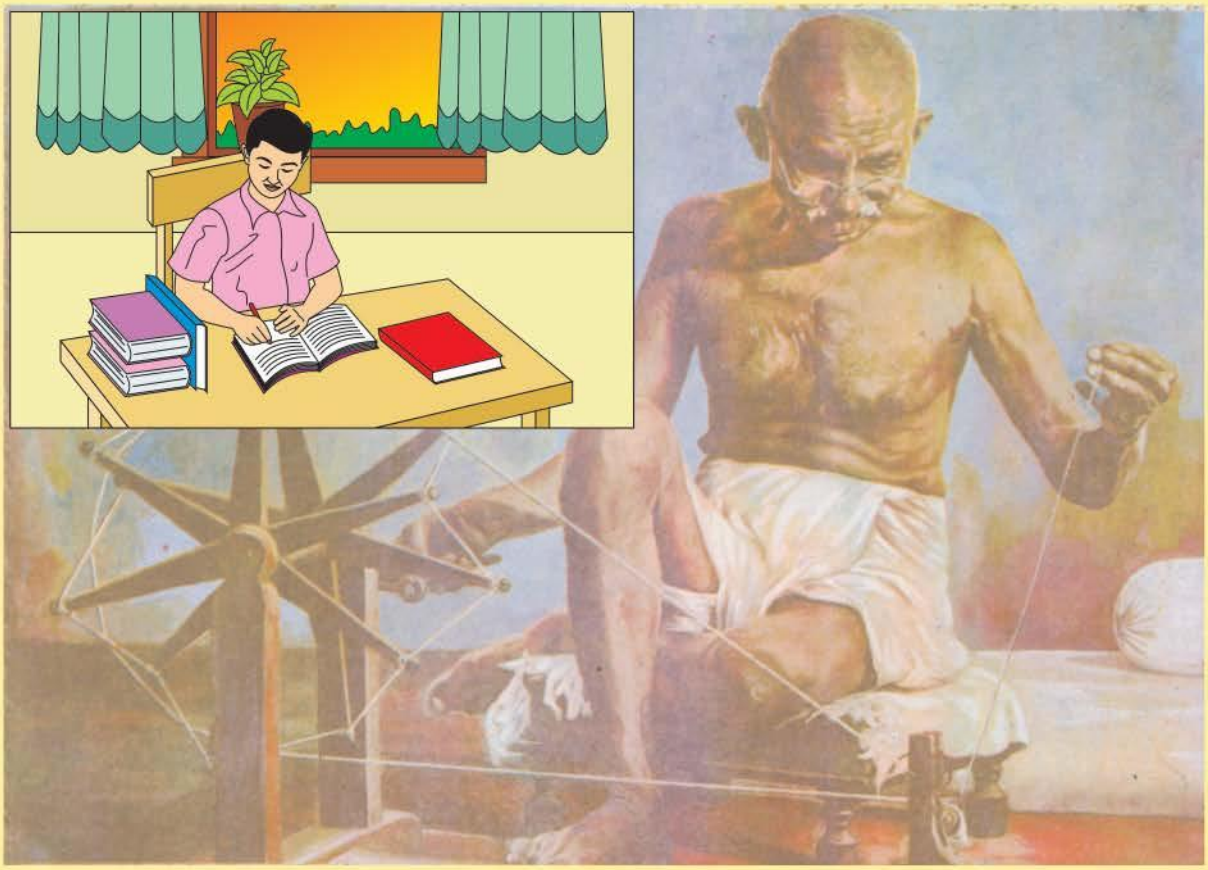

शिक्षा का अधिकार

सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें

मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल

सहायक वाचन

कक्षा–आठवीं

हमारा मध्यप्रदेश

योग शिक्षा

महात्मा गांधी जी

म.प्र. राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

सा विद्या या विमुक्तये

शिक्षा का अधिकार

सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें

मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल

इस पुस्तक के मुद्रण में उपयोग किए गए कागज का स्पेसिफिकेशन
अन्तः पृष्ठों के कागज– वाटर मार्क, मैपलिथो, मुद्रण कागज 70 जी.एस.एम., **BIS** गुणवत्ता **IS 1848:2007** (चौथा पुनरीक्षण)
बाह्य पृष्ठों के कवर कागज– 230 जी.एस.एम., एम.जी. कोटेड
"पुस्तक के प्रत्येक पृष्ठ पर निगम का वाटर मार्क है"

वर्ष 2015 मूल्य रु.

प्रकाशन वर्ष 2009
पुन:संशोधन वर्ष 2010, 2011, 2012, 2013, 2014, 2015
© राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल

- **निदेशन** : **मनोज झालानी,** आयुक्त, म.प्र. राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
- **मार्गदर्शन** : **चन्द्रहास दुबे,** अपर मिशन संचालक, म.प्र. राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
  राजेश जैन, अपर मिशन संचालक, म.प्र. राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
  ए. के. दीक्षित, अपर संचालक, म.प्र. राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
- **संयोजन** : **शकुन्तला श्रीवास्तव,** समन्वयक, पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तक निर्माण, म.प्र. राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
  डॉ. सुनयना दुबे, समन्वयक, पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तक निर्माण, म.प्र. राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
- **समन्वयक** : **हमारा मध्यप्रदेश** –डॉ. साधना सिंह, सलाहकार, म.प्र. राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
  योग शिक्षा व महात्मा गांधी–डॉ. लोकेश खरे, सलाहकार, म.प्र. रा.शि.के., भोपाल
- **संपादन** : **हमारा मध्यप्रदेश** – प्रो.आर.पी.पाण्डे, प्राध्यापक व आचार्य, प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.)
  श्री एस.डी.गुरु, से.नि.संचालक, म.प्र.राज्य आरकाइव एण्ड गजेटीयर, भोपाल (म.प्र.)
  श्री भगीरथ कुमरावत, शिक्षाविद, भोपाल (म.प्र.)
  योग शिक्षा – डॉ. साधना दौनेरिया, विभागाध्यक्ष, योग विभाग बरकतउल्ला. वि.वि., भोपाल
  महात्मा गांधी – डॉ. विनय मोहन शर्मा
- **संशोधन** : **हमारा मध्यप्रदेश** – महेश सक्सेना, अध्यक्ष बाल कल्याण समिति, भोपाल
  योग शिक्षा – ओम प्रकाश दुबे, व्याख्याता, शा.उ.मा.वि., जावर, सीहोर
  श्री एम.पी.यादव, योग प्रशिक्षक शा.योग प्रशिक्षण केन्द्र, भोपाल
  महात्मा गांधी – डॉ. विनय मोहन शर्मा
- **लेखक** : **हमारा मध्यप्रदेश** – डॉ. संध्या जैन, व्याख्याता,उ.मा.वि.जबलपुर, कमला प्रसाद चौरसिया, शिक्षाविद्, भोपाल, सौभाग्यमल जैन,से.नि.व्या.,सीहोर
  योग शिक्षा – श्रीमती सुधा राजावत, योग प्रशिक्षक, भोपाल
  डॉ. सरोज पाण्डेय, योग प्रशिक्षक, शा.योग प्रशिक्षण केन्द्र, भोपाल
  श्री सुधीर कुमार राजवैद्य, शिक्षक, शा.प्रा.शाला,भीमनगर,भोपाल
  श्री अरुण कुमार शुक्ला, उच्च श्रेणी शिक्षक,शा.क.मा.शा.बरखेड़ी,भोपाल
  महात्मा गांधी – डॉ. विनय मोहन शर्मा
- **मुख पृष्ठ** : **विकास मालवीय,** म.प्र. राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
- **आकल्पन** : **राकेश सिंह,** हर्षवर्द्धन नगर, भोपाल, 9827765265
- **प्री-प्रेस कार्य** : मध्यप्रदेश माध्यम

मध्यप्रदेश पाठ्यपुस्तक स्थायी समिति द्वारा अनुमोदित

क्र.	नाम/पता	पद
1.	**डॉ. गोविन्द शर्मा,** पूर्व अतिरिक्त संचालक, मध्यप्रदेश-शासन, ग्वालियर	अध्यक्ष
2.	**डॉ. सुभाष गुप्ता** डीन, छात्र कल्याण, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर	सदस्य
3.	**प्रो. सुरेश्वर शर्मा** पूर्व कुलपति, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर	सदस्य
4.	**डॉ. (श्रीमती) बिनय राजाराम** विभागाध्यक्ष हिन्दी श्री सत्य सांई महिला महाविद्यालय, भोपाल	सदस्य
5.	**श्री भगीरथ कुमरावत** शिक्षाविद्, भोपाल	सदस्य
6.	**डॉ. के.डी. शाक्य** अपर संचालक, उच्च शिक्षा, म.प्र.शासन, भोपाल	सदस्य
7.	**डॉ. प्रेम भारती** सेवानिवृत्त प्राचार्य, भोपाल	सदस्य
8.	**डॉ. नाथूराम राठौर** सेवानिवृत्त प्राचार्य, शा.महाविद्यालय, जाबेरा (दमोह)	सदस्य
9.	**डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित** बिकोटीपुरा, उज्जैन	सदस्य
10.	**सुश्री कृष्णा पर्ते** प्राचार्य, शा.कन्या उ.मा.विद्यालय,गोविन्दपुरा, भोपाल	सदस्य
11.	**प्रो. विनोद कुमार** सेवानिवृत्त प्राचार्य, उत्कृष्ट विद्यालय, सतना	सदस्य
12.	**आयुक्त** म.प्र.राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल	सदस्य सचिव
13.	**आयुक्त** लोकशिक्षण संचालनालय, भोपाल	सदस्य
14.	**सचिव** माध्यमिक शिक्षा मण्डल, भोपाल	सदस्य
15.	**प्रबन्ध संचालक** मध्यप्रदेश पाठ्यपुस्तक निगम, भोपाल	सदस्य
16.	**प्रतिनिधि** राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली,	सदस्य
17.	**प्रतिनिधि** नवोदय विद्यालय	सदस्य

आमुख

साहित्य जीवन को संस्कारित करता है। वह जीवन में संवेदना–विस्तार का आधार बनता है और मनुष्य को विवेक सम्पन्न भी बनाता है। साहित्य जीवन में अक्षय आनन्द का स्रोत है। उसमें निहित अनुभूति समाज और व्यक्ति के बीच सामंजस्य को प्रकट करती है। इसमें परम्पराओं, इतिहास और संस्कृति का रचनात्मक स्तर पर समावेश रहता है। इस आधार पर साहित्य, जीवन बोध को जगाने में अपनी सार्थक भूमिका निभाता है। जीवन के प्रति आस्था, समाज के प्रति सहानुभूति और प्राणिमात्र के प्रति करुणा जगाने में साहित्य की अपनी महत्ता है। इसमें सामाजिक परिवर्तन की शक्ति निहित है। इसी आधार पर साहित्य पीढ़ियों को दिशा देने में समर्थ होता है।

छात्र अपने समय और समाज से सम्यक रूप से परिचित हो सकें और अपने व्यक्तित्व का सही दिशा में विकास कर सकें। इस हेतु उसे अच्छे साहित्य से परिचित कराना जरूरी है। छात्र सहजतापूर्वक साहित्य से जीवन प्रेरणाएँ ग्रहण कर सके तथा इस आधार पर वह एक समुन्नत जीवन जीने का मार्ग प्रशस्त कर सकें। इसी उद्‌देश्य से प्रेरित होकर द्रुत पठन के रूप में सहायक वाचन जैसे संकलन की उपयोगिता को महत्वपूर्ण माना गया। प्रस्तुत पुस्तक सहायक वाचन के रूप में ही निर्धारित है। किशोर वर्ग में अपने राष्ट्र और अपने समाज के प्रति कर्त्तव्य भावनाएँ जागृत कर उसकी राष्ट्र–निर्माण एवं समाज–निर्माण में एक सही भूमिका निर्धारित करना भी इस तरह की पाठ्य–सामग्री को प्रस्तुत करने में हमारा उद्‌देश्य रहा है।

छात्रों के भीतर सृजनात्मक शक्तियाँ जागृत करना तथा उन्हें भाषा की सर्जनात्मक चेतना से परिचित कराना भी हमारा उद्‌देश्य है। छात्र अपनी भाषा में समुचित दक्षता प्राप्त कर सके। उसका शब्द भण्डार भी समृद्ध हो सके। सहायक–वाचन का यह खण्ड इस रूप में भी सहयोगी हो सकता है।

प्रस्तुत पुस्तक को तीन खण्डों में विभाजित किया गया है, जिसमें प्रथम खण्ड हमारा मध्यप्रदेश पर आधारित है, जिसमें यह प्रयास किया गया है कि विद्यार्थी अपने प्रदेश के ऐतिहासिक व पौराणिक महत्व को जान सके इस हेतु इसमें पाषाण काल से लेकर वर्तमान समय में मध्यप्रदेश के महत्वपूर्ण तथ्यों को समाहित किया गया है।

द्वितीय खण्ड योग शिक्षा पर आधारित है। योग के माध्यम से विद्यार्थी एकाग्रचित्त होकर स्वाध्याय में अधिक सफलता अर्जित कर सकता है और निरोगी रह सकता है। शिक्षकों से अपेक्षा है कि योग क्रिया कराते समय पुस्तक में दिए गए आवश्यक निर्देशों का पालन अवश्य करें।

तृतीय खण्ड महात्मा गांधी पर आधारित है, जिसमें उनके सम्पूर्ण वैभव को समेटने का प्रयास किया गया है, ताकि विद्यार्थी उनके जीवन के विभिन्न पहलुओं से परिचित हो सकें।

पुस्तक के इन खण्डों में बोध प्रश्न के माध्यम से विद्यार्थी के लिए पर्याप्त अवसर प्रदान किए गए हैं। जिससे उसकी समझ विकसित हो सके।

सहायक वाचन की इस पुस्तक हेतु आपके सुझाव सदैव आमंत्रित हैं।

आयुक्त
मध्यप्रदेश राज्यशिक्षा केन्द्र, भोपाल

विषयवस्तु का मासिक विभाजन

क्र.	माह	विषयवस्तु विभाजन
1.	अप्रैल	हमारा मध्यप्रदेश–पाषाण काल से ताम्र पाषाण काल तक, योग शिक्षा–योग शिक्षा के महत्व पर चर्चा, महात्मा गांधी–मोहन का बचपन, मूल्यांकन।
2.	जुलाई	हमारा मध्यप्रदेश–वैदिक काल में मध्यप्रदेश, योग शिक्षा–योग परिचय, महात्मा गांधी–गांधी जी की लंदन यात्रा, मूल्यांकन।
3.	अगस्त	हमारा मध्यप्रदेश–महाजनपद काल से शुंग, सातवाहन काल, योग शिक्षा–आसन, महात्मा गांधी–बैरिस्टर गांधी, मूल्यांकन।
4.	सितम्बर	हमारा मध्यप्रदेश–गुप्त काल, योग शिक्षा–आसन, महात्मा गांधी–अफ्रीका में कुली बैरिस्टर गांधी, मूल्यांकन।
5.	अक्टूबर	हमारा मध्यप्रदेश–मध्यप्रदेश के प्रमुख राजवंश, योग शिक्षा–शुद्ध क्रियाएँ, महात्मा गांधी–अफ्रीका में गांधी के संघर्षमय कार्य, मूल्यांकन।
6.	नवम्बर	हमारा मध्यप्रदेश–सल्तनत व मुगल काल में मध्यप्रदेश, योग शिक्षा–प्राणायाम, महात्मा गांधी–दक्षिण अफ्रीका में बैरिस्टर गांधी जी का पुनरागमन एवं स्वदेश में गांधी जी, मूल्यांकन।
7.	दिसम्बर	हमारा मध्यप्रदेश–प्रदेश के प्रभावशाली क्षेत्र एवं राजवंश, योग शिक्षा–बंध एवं मुद्राएँ, महात्मा गांधी–गांधी जी की तीसरी अफ्रीकी यात्रा, मूल्यांकन।
8.	जनवरी	हमारा मध्यप्रदेश–बुंदेला विद्रोह से लेकर देश की स्वतंत्रता तक, योग शिक्षा–ध्यान, महात्मा गांधी–इंग्लैण्ड मार्ग से भारत प्रस्थान, मूल्यांकन।
9.	फरवरी	हमारा मध्यप्रदेश–मध्यप्रदेश का गठन, योग शिक्षा–पुनरावृत्ति, महात्मा गांधी–भारत में महात्मा गांधी और स्वातन्त्र आंदोलन, संस्मरण सुमन, विचार बिन्दु, मूल्यांकन।
10.	मार्च	पुनरावृत्ति तथा वार्षिक परीक्षा, परीक्षाफल निर्माण और घोषणा।

नोट : सहायक वाचन प्रथम भाषा के साथ पढ़ाया जाना प्रस्तावित है।

अनुक्रमणिका

हमारा मध्यप्रदेश (खण्ड-एक)

अध्याय	पाठ का नाम	पृष्ठ क्र.
●	प्रस्तावना	02
अध्याय (1)	पाषाणकाल से ताम्रपाषाण काल तक	03
अध्याय (2)	वैदिक काल में मध्यप्रदेश	08
अध्याय (3)	महाजनपद काल से शुंग, सातवाहन काल	10
अध्याय (4)	गुप्त काल	14
अध्याय (5)	मध्यप्रदेश के प्रमुख राजवंश	16
अध्याय (6)	सल्तनत व मुगलकाल में मध्यप्रदेश	19
अध्याय (7)	प्रदेश के प्रभावशाली क्षेत्र एवं राजवंश	22
अध्याय (8)	बुंदेला विद्रोह से लेकर देश की स्वतंत्रता तक	26
अध्याय (9)	मध्यप्रदेश का गठन	28

योग शिक्षा (खण्ड-दो)

अध्याय (1)	योग परिचय	30
अध्याय (2)	आसन	36
अध्याय (3)	शुद्धि क्रियाएँ	56
अध्याय (4)	प्राणायाम	60
अध्याय (5)	बन्ध एवं मुद्राएँ	63
अध्याय (6)	ध्यान	70
●	परिशिष्ट	73

महात्मा गांधी (खण्ड-तीन)

अध्याय (1)	मोहन का बचपन	76
अध्याय (2)	गांधीजी की लंदन यात्रा	82
अध्याय (3)	बैरिस्टर गांधी	88
अध्याय (4)	अफ्रीका में 'कुली बैरिस्टर गांधी'	90
अध्याय (5)	अफ्रीका में गांधीजी के संघर्षमय कार्य	92
अध्याय (6)	दक्षिण अफ्रीका में बैरिस्टर गांधीजी का पुनरागमन	99
अध्याय (7)	स्वदेश में गांधीजी	102
अध्याय (8)	गांधीजी की तीसरी अफ्रीकी-यात्रा	104
अध्याय (9)	इंग्लैण्ड-मार्ग से भारत-प्रस्थान	113
अध्याय (10)	भारत में महात्मा गांधी और स्वातंत्र्य आन्दोलन	115
	संस्मरण-सुमन	149
	विचार-बिन्दु	153

हमारा मध्यप्रदेश

(खण्ड-एक)

मध्यप्रदेश का ऐतिहासिक परिदृश्य

मध्यप्रदेश, भारत के केन्द्र में स्थित होने के कारण देश का हृदय स्थल कहलाता है। भूगर्भिक संरचना की दृष्टि से यह भारत का प्राचीनतम भूभाग है। हिमालय से भी पुराना यह भूखण्ड किसी समय उस संरचना का हिस्सा था, जिसे गोंडवाना भूभाग कहा गया है। मध्यप्रदेश का अनादिकाल से ही ऐतिहासिक महत्व रहा है। यहाँ नर्मदा घाटी के अंचल में अनेक सभ्यताएँ पुष्पित,पल्लवित हुई इस कारण यह क्षेत्र आज भी पुरातत्व एवं ऐतिहासिक अवशेषों के आकर्षण का केन्द्र है। विभिन्न कालखण्डों में इस भूभाग को अनेक नामों से पुकारा व पहचाना गया है। ऐतिहासिक और पौराणिक संदर्भों से गुँथे मध्यप्रदेश में अतीत की एक नहीं अनेक गौरवगाथाएँ हैं। प्राप्त प्रमाणों के आधार पर यहाँ भगवान राम ने अपने वनवास का कुछ समय बिताया एवं रामपथ गमन यहाँ होना माना जाता है। इसी प्रकार कृष्ण ने सांदीपनि ऋषि के आश्रम में शिक्षा पाई व पाण्डवों ने यहाँ अज्ञातवास गुजारा।

प्रकृति ने मध्यप्रदेश को बेतवा,नर्मदा,ताप्ती,चम्बल,क्षिप्रा जैसी जीवनदायनी नदियों का उपहार दिया है। यहाँ की भूमि विंध्याचल सतपुड़ा की विशाल पर्वत श्रृंखलाओं एवं मनोरम वनों से आच्छादित हैं। यहाँ ग्वालियर, मांडू, नरवर, असीरगढ़, चंदेरी के किले प्राचीन स्थापत्य कला के अद्‌भुत नमूने हैं। ओंकारेश्वर, महेश्वर, उज्जयिनी, अमरकंटक, पचमढ़ी, ओरछा ऐतिहासिक तथा धार्मिक स्थल के रूप में प्राचीन वैभव के प्रतीक हैं। यहाँ के पर्यटन स्थल सैलानियों को भी अपनी ओर आकर्षित करते हैं। मध्यप्रदेश में चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य, अशोक, राजाभोज, छत्रसाल, तात्याटोपे, अहिल्याबाई, अंवतीबाई, भीमानायक तथा चन्द्रशेखर आजाद आदि महापुरूषों का गौरवशाली इतिहास है। कालीदास, बाणभट्ट, भर्तृहरि, जगनिक, ईसूरी, केशव व तानसेन ने अपने साहित्य एवं संगीत के योगदान से मध्यप्रदेश के गौरव को समृद्ध किया है। आदिमानव से लेकर 20वीं सदी तक यहाँ अनेक स्मारक, स्तूप, गुफाऐं, प्राचीन सिक्के शैलचित्र, किले आदि उपलब्ध हैं। जिनसे हम प्रदेश के प्राचीन वैभव को जान सकते हैं। भीमबेटका की गुफाएँ, साँची के बौद्ध स्तूप तथा खजुराहो के मंदिर विश्व धरोहर बन गए हैं, ये प्राचीन बेजान पत्थरों और ईंटों से निर्मित वस्तुएँ ही नहीं हैं, अपितु तत्कालीन स्थापत्यकला, इतिहास, संस्कृति और जनजीवन के ज्वलंत प्रमाण हैं।

अध्याय 1 पाषाणकाल से ताम्रपाषाण काल तक

पाषाणकाल

किसी भी नगर, प्रांत और देश की प्रागैतिहासिकता का पता भूगर्भ विज्ञान की खोज व उत्खननों से प्राप्त औजारों, सिक्के, बर्तन, कलाकृतियों आदि से लगता है। ये सभी उस काल की महिमा को प्रमाणिकता के साथ प्रस्तुत करते हैं।

भू-वैज्ञानिक दृष्टि से मध्यप्रदेश का अस्तित्व प्रागैतिहासिक काल से है। प्रागैतिहासिक काल शब्द मुख्य रूप से पाषाण काल के लिए प्रयुक्त होता है। सभ्यताओं के विकास का यह प्रारंभिक काल था। माना जाता है कि पाषाण युग वह युग है जब मनुष्य पत्थरों के औजार बनाकर हिंसक जानवरों से अपनी रक्षा करने वाला आदि मानव दिखाई पड़ता था। तब मानव जंगलों, पर्वतों और नदी घाटियों में विचरण करता था तथा कंदमूल फल या पशुओं का शिकार कर अपना पेट भरता था एवं पहाडों की सुरक्षित गुफाओं को आश्रय स्थल बना लिया करता था।

मध्यप्रदेश आदिमानव की जीवन स्थली के रूप में दिखाई देता है। प्रदेश के विभिन्न भागों में किए गए उत्खननों और खोजों में प्रागैतिहासिक सभ्यता के चिह्न मिले हैं। कुछ स्थानों पर गेंडा, दरयाई घोड़ा, सुअर, हिरन आदि की उपस्थिति के प्रमाण व जीवाश्म मिले हैं। नर्मदा की घाटी जीवाश्मों के मामले में बहुत समृद्ध है। जब कभी जीव-जन्तु के अस्थि-पंजर, हजारों साल में, पत्थर में परिवर्तित हो जाते हैं तो उसे जीवाश्म कहते हैं।

अमरकण्टक से लेकर होशंगाबाद तक, नर्मदा के किनारे पुरा-पाषाण युग के अनेक अवशेष मिले हैं। पत्थर की एक हस्त कुल्हाड़ी तथा प्राचीन काल के हाथी, गैंड़ा, दरियाई घोड़ा, रीछ, भैसा आदि के अस्थि-पंजर नरसिंहपुर के पास भुतरा में उपलब्ध हुए हैं। जिन परतों में हस्त-कुल्हाड़ी मिली वह लगभग चार लाख वर्ष प्राचीन मानी गई थी। 1982 में नर्मदा घाटी में सीहोर जिले की बुदनी तहसील के गाँव हथनौरा में आदिमानव का पत्थर बन चुका कपाल मिला है। वह छह लाख वर्ष पुराना है। यह भारत के प्राचीनतम आदिमानव अवशेष हैं। इस खोज से मध्यप्रदेश क्षेत्र की प्राचीनता उजागर हुई है।

इस काल में मानव ने अपनी कलात्मक अभिरूचियों की भी अभिव्यक्ति शैल चित्रों के रूप में की है। प्रागैतिहासिक संस्कृतियों के लिए निम्न काल क्रम प्राप्त होता है—

1. पुरा पाषाण काल 2. मध्य पाषाण काल 3. नव पाषाण काल

पुरा पाषाण काल

प्रागैतिहासिक कालीन अवशेषों में पाषाण उपकरण प्राप्त हुए। इन उपकरणों के आकार-प्रकार एवं इन पर

धार बनाने के लिए फल्कीकरण के आधार पर इसको कई भागों में विभक्त किया है। पुरा पाषाण काल में विकास के कई चरण देखे गए हैं। कालांतर में विद्वानों द्वारा पुरा पाषाण काल का विभाजन निम्न पुरा पाषाण काल, मध्य पुरा पाषाण काल एवं उत्तर पुरा पाषाण काल में किया गया है। इन कालों से संबंधित उपकरणों का विवरण उसी क्रम में मिलता है।

अ. निम्न पुरा पाषाण काल

इस युग में मनुष्य नदियों के किनारों के कगारों या पर्वत कन्दराओं में रहता था। इस काल का विशेष औजार जिसे बिना बेंट अथवा लकड़ी के बेंट के साथ उपयोग में लाया जाता था- हस्तकुठार हैंडैक्स था। इसके अतिरिक्त खुरचनी (क्लीवर), मुष्ठिकुठा, बेहुल तथा क्रोड भी इस काल के औजार है। अमरकण्टक से लेकर होशंगाबाद तक, नर्मदा के किनारे पुरा-पाषाण युग के अनेक अवशेष मिले हैं। पुरा पाषाण काल के अवशेष चंबल, कुण्डाला, पार्वती, बीना, बेतवा, नर्मदा, सोन नदियों तथा सीधी, शहडोल, सागर, जबलपुर, पूर्व तथा पश्चिम निमाड, मंदसौर, विदिशा, होशंगाबाद, छतरपुर, रीवा, सिवनी, पन्ना, धार जिलों में भी मिले हैं।

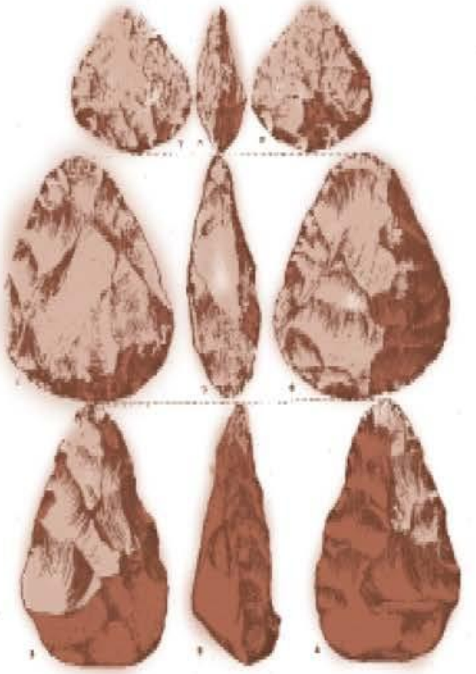

निम्न पुरा पाषाण कालीन हैंडेक्स

ब. मध्य पुरा पाषाण काल

विद्वानों का मत है कि भारतवर्ष में निम्न पुरा पाषाण काल तथा उत्तर पुरा पाषाण काल के बीच एक मध्यान्तर है। इस काल में उपकरण फलक पर बनने लगे एवं छोटे हो गये। सन् 1954-55 में नेवासा (महाराष्ट्र) में किए गए खोज में तथा बाद में किए गए अन्य स्थानों की खोज में यह प्रमाणित हो गया है कि निम्न पुरा पाषाण तथा मध्य पुरा पाषाण युगीन औजारों से भिन्न थे। इस काल में बनाये गये औजारों की निर्माण कला भी भिन्न थी। कुछ औजार तो पूर्व संस्कृति के समान ही लम्बे बनाये गये परंतु इसके विपरीत कुछ 3 से.मी. से छोटे ही बने। ये औजार जैस्पर, चार्ट, चर्ट्ज, फिलन्ट, चाल्सीडोनी आदि उच्चकोटि के मुलायम पत्थरों से बनाये जाते थे। बनाये जाने वाले औजारों में विभिन्न प्रकार की खुरचनियाँ (स्क्रैपर) तथा बेधनी (बोरर) प्रमुख हैं। मध्यप्रदेश में चंबल, बेतवा, नर्मदा, सोन तथा इन नदियों की घाटियों में मध्य पुरा पाषाण युगीऔजार प्राप्त हुए हैं। जबलपुर, सागर, मंदसौर, नरसिंहपुर, दमोह, सिवनी,सीधी ,विदिशा, गुना, होशंगाबाद, ग्वालियर, छिंदवाड़ा, उज्जैन आदि जिलों में मध्य पुरा पाषाण युगीन औजार प्राप्त होने वाले स्थल मिले हैं।

स. उत्तर पुरा पाषाण काल

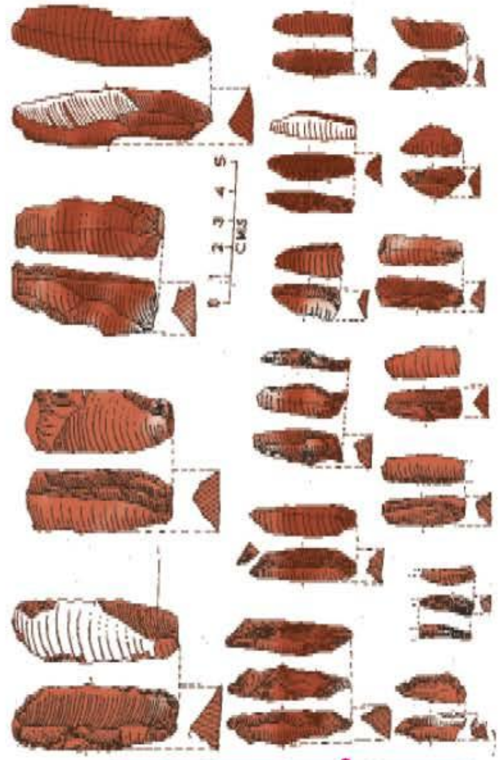

उत्तर पुरा पाषाण कालीन उपकरण

उत्तर पुरा पाषाण काल से संबंधित औजारों में ब्लेड, कोड, फलक, खुरचनी, बेधनी, समलम्ब ब्लेड उपकरण तथा अर्धचन्द्रकार औजार हैं। इन औजारों तथा उत्खनों में प्राप्त अन्य उपकरणों से ज्ञात होता हैं कि उत्तर पुरा पाषाण काल के निवासी शिकारों से प्राप्त विभिन्न पशु तथा मछली पर अपनी जीविका निर्वाह किया करते थे। लघु पाषाण औजारों के साथ पशु तथा मछली की हड्डियाँ इस बात के प्रमाण हैं।

आभूषणों में मनके तथा सीप की बनी वस्तुओं का भी मानव उपयोग करते थे। इस काल के औजार पूर्वी निमाड़, शहडोल, मंदसौर, सीहोर, होशंगाबाद, गुना,ग्वालियर, रतलाम, इन्दौर, मण्डला, तथा धार जिलों में स्थित अनेक स्थानों से प्राप्त हुए हैं। भीमबेटका के शैलाश्रयों से इस काल के अनेक शैलचित्र भी प्राप्त हुए हैं।

मध्य पाषाण काल

यह युग भू विज्ञान के नूतन काल से सबंधित है। इस समय हिमयुग समाप्त हो गया था एंव इस समय गर्म जलवायु का प्रारम्भिक चरण था। इस युग का मानव आखेटक व संग्राहक था। मांसाहार के साथ साथ कंदमूल फलसेवन करने लगा था। इस काल के उपकरण छोटे थे जैसे हसिया,चाकू आदि।अधिकांश उपकरण छोटी ब्लेड पर निर्मित मिलते है। इसलिए इस काल के उपकरणों को लघु पाषाण (माइक्रोलिथ) कहते है।इस काल में मृदभाण्डों (मिट्टी के बर्तनों) पर चित्रकारी भी प्राप्त होती है। बहूमूल्य पत्थरों पर निर्मित अनेकानेक मनके आभूषणों के परिचायक है। इसकाल से संबंधित शैलचित्र के प्रमाण भीमबेटका, आदमगढ, सागर, पचमढी, रायसेन, नरसिहगढ, रीवा, सतना, ग्वालियर, शिवपुरी, भानपूरा में प्राप्त हुए है।

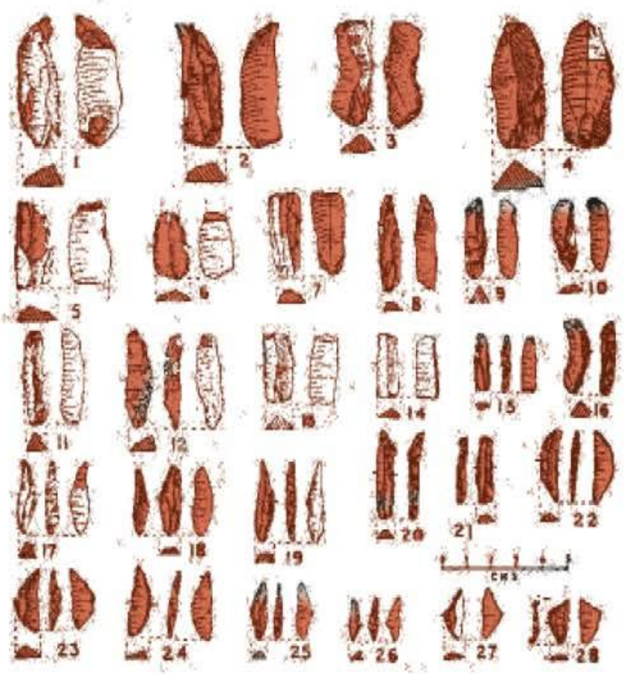

मध्य पाषाण कालीन उपकरण

शैल चित्र

चित्रित गुफाओं के मामले में मध्यप्रदेश देश में सबसे अधिक समृद्ध है। शैल चित्रों को लेकर म.प्र. की गिनती विश्व स्तर पर है। विन्ध्य और सतपुड़ा की पहाड़ियों में हमारे प्रदेश में भारत के लगभग पचहत्तर प्रतिशत शैल चित्र पाए गए है। आदि मानव द्वारा चित्रित गुफा चित्रों में उस युग की संस्कृति के तथा मानव की सम्पूर्ण गतिविधियों के दर्शन होते हैं। ये गुफाएँ सारे प्रदेश में फैली हैं। विशेषकर इन्हें पचमढ़ी, होशंगाबाद, सागर, छिंदवाड़ा, छतरपुर, पन्ना, ग्वालियर, सीहोर, रायसेन, विदिशा, गुना, रीवा, मंदसौर, शिवपुरी में देखा जा सकता है। भीमबेटका तथा जावरा के चित्र समूह, विश्व के सबसे बड़े चित्र समूह हैं।

भीमबेटका के शैलचित्र

मध्यप्रदेश में मध्यपाषाण संस्कृति के औजार भी बड़ी संख्या में मिले हैं। नर्मदा घाटी में ये नरसिंहपुर, होशंगाबाद तथा महेश्वर में पाए गए हैं। मंदसौर, इंदौर, भीम बैठ्का व दमोह की सोनार तथा व्यारमा नदियों की घाटी में, औजार मिले है। सोन नदी घाटी में लगभग 500 औजार प्राप्त हुए हैं। इसके साथ ही रतलाम, उज्जैन, सीहोर, भोपाल, जबलपुर, मण्डला, सागर, छिंदवाड़ा, पन्ना, छतरपुर, गुना, धार आदि में भी मध्यपाषाण कालीन अवशेष मिले हैं। उत्खनन में ऐतिहासिक काल की पुरातत्व सामग्री भी बड़ी संख्या में खोजी जा चुकी है।

भोपाल के निकट भीमबेटका (जिला रायसेन), होशंगाबाद के निकट आदमगढ़ की गुफाओं तथा सागर के निकट की पहाड़ियों एवं मुरैना जिले में पहाड़गढ़ के निकट से प्राप्त शैलचित्रों से उस समय के मानव की कलात्मक अभिरुचि व जीवन शैली के प्रमाण प्राप्त होते हैं।

नव पाषाण काल

यह वह समय था जब मानव घुमन्तू या खाना बदोश जीवन से सामाजिक जीवन की ओर कदम बढ़ा रहा था। मध्यप्रदेश में नव पाषाण काल के घोट, अच्छी तरह तराशे गए और चमकाए गए औजार एरण, जबलपुर, सागर, दमोह, हटा, होशंगाबाद आदि में मिले हैं।

इस युग में कई विधाएं प्रारम्भ हुईं। अब आदिमानव भ्रमणशील जीवन छोड़कर एक निश्चित स्थान पर रहने लगा था। इस युग के उपकरण पालिस युक्त एवं चमकीले होते थे। इस युग के उपकरणों मे सेल्ट, कुल्हाड़ी, वसूला, चीजेक, रचक, घन तथा ओप करने वाले उपकरण प्रमुख हैं। इन उपकरणों के साथ अस्थि निर्मित पालिसयुक्त उपकरण प्राप्त होते हैं। जिनमें रोटो हेड़किस हुक, रिंग, प्वाइंट आदि हैं। नव पाषाण युग के उपकरणों के अध्ययन से ज्ञात होता हैं कि इस काल का मनुष्य सभ्यता की दृष्टिकोण से प्रगति की ओर अग्रसर हुआ। इस काल में मनुष्य ने कृषि कार्य का ज्ञान प्राप्त किया, पशु पालन प्रारम्भ किया तथा मृदभाण्ड (मिट्टी के बर्तन) कला का अविष्कार किया। वस्त्र निर्माण, गृह निर्माण और अग्नि का प्रयोग करना सीखा। इस प्रकार नव पाषाण युग में वर्तमान सभ्यता के अनेक अंगों का बीजारोपण हुआ।

ताम्रपाषाण काल

विश्व के अन्य भागों की तरह भारत में भी पाषाण उपकरणों के साथ साथ धातु उपकरणों का प्रयोग प्रारम्भ हुआ। ताँबा सर्वप्रथम उपयोग में लाया गया। अत: यह युग को ताम्रयुग के नाम से जाना जाता है। कालान्तर में मनुष्य ने यह अनुभव किया कि अति कठोर कार्यों के लिए ताँबा अधिक उपयोगी नही हैं। अत: इस आवश्यकता की पूर्ति हेतु मनुष्य ने ताँबे से मिश्रित धातु से काँसे का अविष्कार किया। अत: यह युग काँस्य युग के नाम से भी जाना जाता है।

ताम्रपाषाण काल में मध्यप्रदेश में नर्मदा, चम्बल और बेतवा के तट पर मोहन जोदड़ो और हड़प्पा की समकालीन सभ्यता के अवशेष कायथा तथा दंगवाड़ा (उज्जैन जिला), आवरा, तथा अहार (मंदसौर), पिपल्या लोरका (रायसेन), एरण (सागर), महेश्वर तथा नवदाटोली (पश्चिम निमाड़), बेसनगर (विदिशा) आदि में बड़ी संख्या में मिले हैं। इस प्रकार मालवा क्षेत्र ताम्र पाषाण संस्कृति की धरोहर के लिए समृद्ध है।

इस काल में मानव के क्रियाकलापों में बहुत से परिवर्तन दिखाई पड़ते हैं। इस समय मानव पक्के मकान बनाने के लिए ईंटों का निर्माण करने लगा। इसके अलावा उद्योग धंधे और व्यापार भी करने लगा था। धर्म के प्रति उसकी आस्था बढ़ी व उसने पूजा व प्रार्थना करना शुरू किया। इसके साथ ही नृत्य, संगीत और पारिवारिक जीवन के विभिन्न दृश्य भी इस युग के मानव जीवन में होना पाया गया।

अभ्यास प्रश्न

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न–1 पाषाण युग किसे माना जाता है?

प्रश्न–2 पाषाण युग को कितने भागों में बाँटा जा सकता है? लिखिए।

प्रश्न–3 पाषाण युग का मानव किस प्रकार का जीवन जीता था?

प्रश्न–4 मध्यप्रदेश को आदिमानव की जीवन स्थली क्यों कहा जाता है?

प्रश्न–5 मध्यप्रदेश में शैलचित्र कहाँ–कहाँ प्राप्त हुए हैं?

प्रश्न–6 नवपाषाण काल में मानव किस प्रकार प्रगति के पथ पर अग्रसर हुआ? समझाइए।

प्रश्न–7 ताम्र पाषाण संस्कृति के प्रमाण मध्यप्रदेश में कहाँ मिले हैं एवं वे किस प्रकार के मानव जीवन को इंगित करते हैं?